International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-07-2022, Accepted: 04-08-2022, Published: 19-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 75-80

कुमाउँनी साहित्य में व्यक्त स्वतंत्रता–संग्राम एवं राष्ट्रीयता की भावना

गिरीश चन्द्र[1], सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा[2]
[1] शोधार्थी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत
[2] उपाचाय, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
कुमाउँनी साहित्यकारों ने अपने काव्य में देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से ही कुमाऊँ में भी राष्ट्र को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाने के लिए सैकड़ों क्रांतिकारी देशभक्तों ने अपना योगदान दिया। यहाँ के गढ़वाल रेजीमेंट व कुमाऊँ रेजीमेंट की सेनाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। वर्तमान में भारत की हो रही दुर्दशा के कारण कुमाउँनी साहित्यकारों ने अपने देश–प्रदेश के उत्थान और भारतवर्ष की जीर्ण–शीर्ण होती हुई राष्ट्रीयता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है।

मूल शब्दः देश प्रेम, राष्ट्रीयता, ब्रिटिश शासन, दुर्दशा, पुनर्स्थापित, सम्प्रदाय, संकीर्णता, एकाकीपन, मनोवेग, अत्याचार, आदर्शात्मक, समसामयिक, बलिदान, नैतिकता, धर्म–निरपेक्षता, आत्म–विश्लेषण, अखण्डता, जनमानस, अखण्डता।

प्रस्तावना
कुमाउँनी साहित्यकारों ने अपने काव्य में देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से ही कुमाऊँ में भी राष्ट्र को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाने के लिए सैकड़ों क्रांतिकारी देशभक्तों ने अपना योगदान दिया। यहाँ के गढ़वाल रेजीमेंट व कुमाऊँ रेजीमेंट की सेनाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। कुमाऊँ में जगह–जगह कई प्रकार के आंदोलन तत्कालीन महापुरुषों नेताओं की अध्यक्षता में होते रहे। कुमाऊँ के वीरों ने स्वयं को इस स्वाधीनता संग्राम में खुद को समर्पित कर दिया। कुमाऊँ में राष्ट्रप्रेम व राष्ट्रीयता की भावना के चलते ही यहाँ के निवासियों में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के शासन के विरूद्ध आक्रोश दिखाई दिया जो कि यहाँ के साहित्य में भी देखने को मिलता है। आज हम जिस समाज में रहते हुए राष्ट्रप्रेम की भावना का प्रचार–प्रसार होते देखना चाहते हैं, उसका एक सशक्त माध्यम साहित्य है। साहित्य में देशप्रेम व राष्ट्रीय–एकजुटता का संदेश देने के लिए कुमाउँनी साहित्यकारों ने पुरजोर प्रयास किया है और उसमें यथोचित सफलता भी पायी है।
आज हमारा देश–प्रदेश जाति, धर्म, सम्प्रदाय तथा भाषा जैसी संकीर्णताओं में जकड़ते जा रहा है, जिससे समाज एकाकीपन के अँधेरे में भटकने को मजबूर है। ऐसे में हम जो अखण्ड भारत का फिर से सपना साकार होना देखना चाहते हैं, उसे बहुत कठिन कार्य जैसा होते देख रहे हैं। भारत की हो रही इस दुर्दशा से साहित्य–जगत में काफी हलचल है, जिसके फलस्वरूप कुमाउँनी साहित्यकारों ने अपने देश–प्रदेश के उत्थान और भारतवर्ष की जीर्ण–शीर्ण होती हुई राष्ट्रीयता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है। कुमाउँनी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में भारतवर्ष की अखण्डता, वैभव, सुख–समृद्धि, यहाँ के सौन्दर्य इत्यादि का सफल प्रतिपादन किया है एवं अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना का सुंदर समन्वय किया है–
कुमाउँनी साहित्य के आरंभिक कवियों में रामदत्त पंत 'कविराज' ने समाज सुधार एवं राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर कविताएँ लिखी हैं। गाँधी जी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए वे युवाओं को प्ररित करते हुए कहते हैं–

"उठो रै ज्वाने लियो नंङरा निशाण,
रणसींग बजाओ अब अल्सेट क्ये छ।
पछिल नि चैबेर अघिल कै हिटो,
मुखिया का हुकुम में सब मरि मिटो।।" [1]

जब 1948ई0 में गाँधी जी की मृत्यु हुई तो सम्पूर्ण देश शोक–लहर में डूबा हुआ था। तब चन्द्रलाल वर्मा चौधरी जी ने अपने मनोवगों में बसे गाँधी जी के मृत्यु का करुणा–दृश्य इस प्रकार व्यक्त किया–

"सुन्न लग सुन्न भयो, हंसा लग सुन्न,
सुन्न सुन्न ठौर ठौर, जाँई ताँई सुन्न।
सुन्न हुँणी पुछौ मैंले के है रौ छै सुन्न
भुकुरि भुकुरि कयो, बापू भया सुन्न।।" [2]

भारत का अतीत गौरवशाली रहा है। इसी गौरवशाली अतीत से लेकर स्वतंत्रता–प्राप्ति तक के संघर्ष का वर्णन अल्मोड़ा के खिमानंद शर्मा जी की कविताओं में मिलता है–

"स्वतंत्रता लिजी आज है जावो तैयार
पराधीनी छुटी जाली देशक उद्धार।।" [3]

आजादी के पश्चात् यद्यपि अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए परंतु उनकी दी हुई गुलाम मानसिकता को भारतवासी आज भी अपनाते हैं। इसी बात को लेकर कुमाउँनी कवि शेरसिंह मेहता कहते हैं–

"अब भी चेतो! ओ भारत के बेटो!
खोदो न कबरें न चिता में लेटो।।
सती सावित्री ओ सीता की बेटी।
पतिवृत्त धर्म की खोलो तो पेटी।।
तू भारत की जननी क्यों है उदास।।" [4]

गोरखा राज के बाद कुमाऊँ अंग्रेजों के अधीन आ गया। अंग्रेजों ने यहाँ की जनता पर कई अत्याचार किए और अल्मोड़ा का नक्शा तक बदल दिया गया, जिसका वर्णन गुमानी पंत जी की रचना में निम्नवत् हुआ है–

"विष्णु का देवाल उखाड़ा, ऊपर बँगला बना खरा,
महाराज का महल ढहाया बेड़ी खाना तहाँ धरा।
मल्ले महल उड़ाई नंदा बँगलों से भी तहाँ भरा,
अंग्रेजों ने अल्मोड़े का नक्शा और ही और करा।।" [5]

शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़' की रचनाओं में भी राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखरित हुआ है। कवि भारतवर्ष को अपनी जान से भी अधिक प्रेम करते हैं। जाति, सम्प्रदाय, धर्म आदि रूपों की भिन्नता होते हुए भी कवि समस्त जनता को एक साथ रहने व भिन्नता में एकता लाने की कामना करते हैं–

"रंग–बिरंगी पंछी, मगर एक डाली रूँल हम
ऊँच–नीच, नीच–ऊँच कूनी एक थाली खूँल हम।।" [6]

गोपाल दत्त भट्ट जी का 'प्रथम काव्य–संकलन' धार्तिक–पीड़ (1982) है। इस संग्रह के चार भाग हैं, इसके पहले भाग में देशभक्ति, राष्ट्रीयता और सामाजिक चेतना प्रदान करने वाली रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में आदर्शात्मकता का पुट है। कवि देश के नौजवानों व आने वाली पीढ़ी को आजादी को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है–

"सनसनाट आनि भुइ को छू
बादौ कावो उरीणौ
अन्यार भैर छू, गंग गैर छू
कत्थ ठीक अद्यखीणौ
खेवटा मणि नाव समइ बे ल्हिजे।
धर दे मुच्छयाव अन्यार में
त्यर बाट बिजुलिकि धार,
भर हाता मैं जोर भर तू
कसिकै भौंर कर पार
खेवटा मुणि नाव समइ बे ल्हिजे।।" [7]

प्रसिद्ध जनकवि हीरा सिंह राणा जी ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता और समसामयिकता का चित्रण किया है। आज मानव राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वार्थ के वशीभूत होकर जनसाधारण को प्रताड़ित करना चाहता है–

"मनख्योव च्यापि गे
थान थापि गे,
थानम घंटि,
हातम कंठि,
मनखा आब निहौ
चाँछै जून
खाँछै खून
माटम् भेंटि बै रिखड़ मारंछै,
कुटई खेड़ि बै
बंदूक कारंछै।।" [8]

कुमाउँनी रचनाकार अपने कुमाउँवासी नौजवानों को संदेश देते हैं कि देश की रक्षा के लिए प्राण–न्यौछावर कर दो। हम जिस मातृभूमि में जन्में हैं उसकी रक्षा के लिए बलिदान देना भाग्यशाली ही होगा। हीरा सिंह राणा जी की 'यौ तिरंगा मिलौ कफन' नामक रचना इस देशप्रेम की ओर संकेत करती है–

"हिटौ हो उठो दद भुलियौ आज कसम खौंला।
हम अपणो ज्यान तका देशै लिजी द्यौंला।।
यो मटपा पाइपोशी वैं हम हया जवाना।
यो माटमा मिलि जाण छ, हम तुमुल निदाना।।" [9]

कुमाउँनी रचनाकारों का अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम न केवल कुमाऊँ क्षेत्र तक सीमित है बल्कि वे समूचे राष्ट्र को अपनी मातृभूमि मानते हैं। डा0 हेम दूबे जी की निम्न पंक्तियों में उनकी देशप्रेम की भावना को देखा जा सकता है–

"य ऊचाँ डाना में थापी
देबी मंदिरोंक छ शोभा न्यारी....
देवभूमि कत्यूरा में
भौते छ बुता–धाणी....
कत्यूरैकि न्यारी शोभा
बाँजा बोट, सल्ला बोटा।
देश आरजू देश छु मेरी खिदमत
म्यहैणी पूछ लियो तुम य देशकि जीनत।।" [10]

कुमाऊँ के वातावरण ने कुमाऊँ–वीरों को पराधीन भारत से लेकर अब तक देश–हित, देश–रक्षा पर मर मिटने की प्रेरणा दी है। वीरों के इस बलिदान को नमन् करते हुए डॉ0 गजेन्द्र बटोही जी कहते हैं–

"देशक तिरंगा कैं ओढ़ि–ढकी बे
ऊणी च्यलो आपण गौं
धन–धन तुम वीर च्यलो
लड़ै मैदानम नि फरक तुमार पौ।
दुश्मणक करि आछा
सबै काम तमाम
तुमरि खुटि हमरि
भौते–भौते परनाम।।" [11]

कुमाउँनी रचनाकारों के कृतित्व में राष्ट्रीय एवं देशप्रेम की भावना उच्चतम स्तर पर विद्यमान है, जिसकी व्यंजना कवि डॉ0 गजेन्द्र बटोही जी की निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है–

"देशक बाडर पर हम
देशाक जवान परहरी छी,
बिरादरि हमरि फौजी छी
वाँ क्वे हिन्दू, क्वे मुसई
बचे सिख इसाई नि छी
भारताक सब च्याल
आपसम भाइ–भाइ छी।।" [12]

जिस प्रकार गाँधी जी ने भारतीय क्रांतिकारियों के मन में राष्ट्रीय चेतना प्रदान कर उन्हें अंग्रेजों से लड़ने के लिए प्रेरित किया उसी प्रकार कवि गोपालदत्त भट्ट जी वर्तमान में अपनी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एक नयी आजादी की लड़ाई के लिए भी तैयार रहने को कहते हैं–

"जभत–
उज्याव मुट्ठि में बंद कर राछी
रावणोंल
और भैरै नै
मैसाक मन भितेर लै–
अन्यारक स्याप–
सिरौनि बादिबेर भैटि रौछी–
उतर बखत तम काँछिया?....
यैकै लिजी कौनू–....
जागर जगोंण जरूड़ी छु

जमात बट्योंण जरूड़ी छु–
लड़ै लड़ण जरूड़ी छु।।" [13]

देश के भविष्य के प्रति कवि दलीप बोरा जी का चिंतन व्यापक–दृष्टिकोण वाला है। कवि अखण्ड भारत के सपने को साकार होते देखना चाहता है, जो मानवीय मूल्यों और नैतिकता पर आधारित हो। इसके लिए कवि जनसाधारण से विनती करता है–

"राष्ट्रीय एकताक अलख जगाओ....
अन्याय–अत्याचार दूर भगाओ!
अखण्ड भारतक निर्माण कराओ।।" [14]

हमारे राष्ट्र की एकता और अखण्डता को तभी बनाए रखा जा सकता है, जब हम जाति, धर्म, क्षेत्र–सम्प्रदाय आदि की भावना से मुक्त होकर सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करें–

"जाति–पाति भेदभाव खालि जंजीर
ऊँच नीच क्वे नैं, सब फकीर
सबनै मिलि–जुलि रौण चैं भलीक
जनम–मरण य दुनियेकि रीत।।" [15]

कवि दलीप बोरा जी राष्ट्रहित के लिए आदर्श दृष्टिकोण को अपनाते हैं, सभी को एक मानव की संतान कहकर राष्ट्रहित में लगने का आह्वान करते हैं–

"नैं कर आब् खून–खराब....
मानवता कैं पछयाण तु!
धरम–मजहबाक् नाम पर तु
किलै आपस में लड़नाछै
सबै एक्कै मानव संतान छा।।" [16]

प्रसिद्ध कुमाउँनी जनकवि शेरदा अनपढ़ का मानना है कि प्रत्येक नागरिक के लिए भारतवर्ष उसके प्राणों के समान या उससे बढ़कर है। इस राष्ट्र की हमें तन, मन, धन से सेवा और रक्षा करनी चाहिए। हमें हमारे राष्ट्र की प्रगति के लिए स्त्री–पुरुष एवं तमाम वर्ग–भेद से ऊपर उठकर यथासंभव सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। इस प्रकार हमारा राष्ट्र फिर से विश्व गुरु बन सकता है–

"जो मिटूँल तन–मन–धन आपुण देश पर,
तिंरगे महान की हम शान बणी जूँल रे।
देश हमौर प्राण छु
प्राण छु, महान छु।।" [17]

देश की सीमा पर लड़ते–लड़ते हमारा सैनिक जीवन की अंतिम साँसें गिनते हुए भी अपने पुत्र को पत्र लिखता है कि वह देश की रक्षा के लिए बलिदान होकर गर्व की अनुभूति करता है–

"तू देशकि फाम करिये, चेला बचिया बचि रै तू!
तू यो झन समझिये म्यौर बाबू मरिगो,
मरण त मैंल उसिक लै छी, धन्य छूँ मैं!
देशाक काम लागूँ।।" [18]

कविवर चारुचन्द्र पांडे 'मातृ–वंदना' रचना में देशवासियों को तन, मन, धन से मेहनत करके देशहित में जान लगाने का संदेश देते है। वे कहते हैं, देश की रक्षा के लिए पीछे मत हटो और अपना सिर मत छुपाओ। प्रेम के गीत गाकर धर्म, जाति, रंग, भाषा आदि के नाम पर खुद को मत बाँटो–

"धूल छौ चन्दना रे, कर्म छौ वन्दना रे।
यौ जनम भूमि की सेवा में मुनइ नी लुकावौ।।
मेहनतै धुन बजाओ, प्रेमा का गीत गावौ।
जाँ अन्यारी रात गुमसुम, ज्ञान का दी जगावौ।।
मेल लै ही जगत छौ, प्रेम में ही सगत छौ।
धर्म, जाती, रंग, भाषन्ाक् नाम पर नी जुज्यावौ।।" [19]

दामोदर जोशी 'देवांशु' भारत के जवानों को जगाने की बात करते हैं। उनका मानना है, भारत के घर–घर में वीर जवान पैदा हों और किसान भी अपने कठिन परिश्रम से देश की विकास में अहम भूमिका निर्वाह करें–

"भारतकि शान हो बड़, दुनि में मान हो
बाड़–बाड़ किरसाण हो, ज्वान जागि गो।
भारत महान हो, जय बोलो किसान हो
यो हिम हिमवान हो, ज्वान जागि गो।।" [20]

'उठौ रे ज्वानौ' कविता में श्री देवसिंह पोखरिया जी देश के जवानों को उत्तेजित होकर उठने को कहते हैं। सपनों में सोते हुए जवानों को संदेश देते हैं कि निराशा के अंधकार से खुद को बाहर लाओ और देश की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहो–

"पड़ि गै धात उठौ रे ज्वानौ!
रड़ि गै थात उठौ रे ज्वानौ।।
मुखपन अपना छपकै ल्हीयौ,
सूर की लाली को पाणी।
देखिया छन् यो बोट–बट्यावा,
कब बटि तुमनैं आँखा ताणी।
बैतालिक बणि पंछी गाणी,
किलै नि फुटनै तुमरी बाणीं ?
तिमिर–निशा में किलै सितीं छा,
स्वैणों की चादर कैं ताणी ?
पड़ि गै धात उठौ रै ज्वानौ।
रड़ि गै थात उठौ रे ज्वानौ।।" [21]

राजेन्द्र बोरा जी की 'मारि ह्याक जगै दे' रचना वीर रस प्रधान रचना है, जिसमें कवि ने देश के नौजवानों को ललकारते हुए चेताया है कि देश की रक्षा के लिए हर पल तत्पर रहो और अपने मन के आलस को दूर भगा दो–

"आँखरों में राफ भरी,
बचनों में ताप भरी
लगा ज़ाग बाई दे तू,
छिरिया मछ्याव कैं!
नचै दें नौताड़ आज,
बदइ जौ गौं गयाठ,
मारि ह्याक जगै दे,
तू सितिया जवान कैं।।" [22]

हमारी राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, स्वतंत्रता व धर्म–निरपेक्षता के पुरोधा जननायक महात्मा गाँधी जी ने भारतीय परतंत्र जनमानस के हृदय में स्वतंत्रता आंदोलन के बीज को संचित किया और क्रांतिकारियों को स्वाधीनता प्राप्ति हेतु संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गाँधी जी के प्रयासों से हमें आजाद भारत में जीवन मिला है। इस भाव को डा॰ शेर सिंह बिष्ट जी इस प्रकार प्रकट करते हैं–

"कुकुड़ बणि बेर आई
गाँधीज्यु हमर देशाक,
उपजाई करोड़ों कुकुड़,
अलग–अलग भेसाक।
आजादिक मंत्र पड़ै
घर–घर अलख जगै
आजादी लाई, दिलों में
देश भक्ति द्यु जगै।।" [23]

हमारा प्रत्येक स्वतंत्रता–दिवस हमें उन समस्त महापुरूषों, शहीदों व क्रांतिकारियों की याद दिलाता है, जिन्होंने हमारी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया। इस क्षण हमें आत्म–विश्लेषण करना चाहिए और संकल्प करना चाहिए कि हम भारत की स्वतंत्रता व अखण्डता को अक्षुण्ण रखने का प्रयास करेंगे कविवर डा॰ शेर सिंह बिष्ट भारत माता के समक्ष अपनी वाणी में कहतें हैं–

"मणियोंकि माल पैरली,
'भरत' जास च्याल गोद खिलाली।

गौतम–गाँधी जास त्यार लाल,
मान–सम्मान लौटै लाल!
ऐ जालि बसंत बहार,
न हुण द्यूँ
अघिल कै तेरि हार!
धर्ति अगास कराल् सब,
'भारत माताकि' जै–जैकार।।" [24]

इस प्रकार उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि कुमाउँनी भाषा के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता–संग्राम एवं राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोपरि स्थान दिया है। कुमाउँनी रचनाकारों ने आरम्भ से आज तक अपनी रचनाओं के माध्यम से देश के प्रति निष्ठा को अनेक आयामों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। देश रक्षा के लिए वीरों को ललकारना हो, नौजवानों को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करना हो, सामान्य जनमानस से स्वतंत्रता एवं अखण्डता बनाए रखने की अपील करना हो, भारतमाता के अमर शहीदों व महापुरूषों की शौर्यगाथाओं का वर्णन करना हो, चाहे तत्कालीन ब्रिटिश शासन का विरोध करना हो आदि; प्रत्येक दृष्टिकोण से कुमाउँनी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को देश के प्रति जागृत एवं एकजुट करने का महान् कार्य किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमाउँनी भाषा और साहित्य का उद्‌भव एवं विकास, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 122
2. कुमाउँनी भाषा और साहित्य का उद्‌भव एवं विकास, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 123
3. कुमाउँनी भाषा और साहित्य का उद्‌भव एवं विकास, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 129
4. सुरभि, शेरसिंह मेहता, आत्मकथा भाग, इथोस सर्विसेज हल्द्वानी, पृ॰ 20
5. कुमाउँनी लोक साहित्य एवं कुमाउँनी साहित्य, प्रो॰ देव सिंह पोखरिया, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा पृ॰ 85
6. कुमाउँनी लोक साहित्य एवं कुमाउँनी साहित्य, प्रो॰ देव सिंह पोखरिया, पृ॰ 105
7. कुमाउँनी लोक साहित्य एवं कुमाउँनी साहित्य, प्रो॰ देव सिंह पोखरिया, पृ॰ 114
8. कुमाउँनी लोक साहित्य एवं कुमाउँनी साहित्य, प्रो॰ देव सिंह पोखरिया, पृ॰ 120
9. यौ तिरंगा मिलौ कफन, हीरा सिंह राणा
10. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, पृ॰ 384
11. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 365
12. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 368
13. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 333
14. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 317
15. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 317
16. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 318
17. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 280
18. उत्तराखण्ड के रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ॰ 281
19. कुमाउँनी काव्य संचयन, सं॰ चन्द्रकला रावत, देवभूमि प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 42
20. कुमाउँनी काव्य संचयन, सं॰ चन्द्रकला रावत, देवभूमि प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 91
21. कुमाउँनी काव्य संचयन, सं॰ प्रो॰ चन्द्रकला रावत, देवभूमि प्रकाशन हल्द्वानी, पृ॰ 106
22. मरि हाक् जगै दे, राजेन्द्र बोरा
23. मेरा रचना संसार, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, पृ॰ 03
24. मेरा रचना संसार, प्रो॰ शेर सिंह बिष्ट, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, पृ॰ 24